हरतालिका तीज व्रत कथा

प्राचीन काल की बात है कि हिमालय की पुत्री पार्वती, भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तपस्या करने लगीं। बचपन से ही देवी पार्वती ने भगवान शिव को अपना पति मान लिया था। उन्होंने अनेक वर्षों तक शिव जी की पूजा और तपस्या की। उनकी भक्ति और तप से प्रसन्न होकर नारद मुनि ने माता पार्वती के पिता हिमालय को यह संदेश दिया कि उनकी पुत्री भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करना चाहती हैं।

हालांकि, हिमालय इस बात से अज्ञात थे और उन्होंने अपनी पुत्री पार्वती का विवाह भगवान विष्णु के साथ करने का निश्चय कर लिया। इस निर्णय से माता पार्वती बहुत दुःखी हुईं और उन्होंने अपनी सखी से अपनी व्यथा साझा की। उनकी सखी ने उन्हें हिम्मत दी और उन्हें हिमालय से दूर एक गुफा में ले गई, जहां पार्वती जी ने भगवान शिव की भक्ति और तपस्या जारी रखी।

पार्वती जी ने भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए बहुत कठिन तपस्या की। उन्होंने अन्न-जल त्यागकर भगवान शिव की आराधना की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और पार्वती जी को पत्नी रूप में स्वीकार किया।

भगवान शिव ने पार्वती जी से कहा कि उनकी तपस्या और श्रद्धा से वे बहुत प्रसन्न हुए हैं और इस व्रत को करने वाली सभी महिलाएं अपने पति की लंबी आयु और सुख-समृद्धि की प्राप्ति करेंगी। इस प्रकार, हरतालिका तीज का व्रत भगवान शिव और माता पार्वती की इस पवित्र कथा से संबंधित है।

इस कथा को सुनने और पढ़ने से महिलाओं को अपने पति के प्रति श्रद्धा और समर्पण का महत्त्व समझ में आता है। इस व्रत को करने से पति की लंबी आयु और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। हरतालिका तीज व्रत की कथा को सुनना और पढ़ना अत्यंत शुभ और फलदायक माना जाता है।